



DR. PRABHAKAR BHANUDAS MANDE

Dr. Prabhakar Bhanudas Mande is an eminent scholar in the field of Folklore, Folk Culture and Literature.

2. Born on 16th December, 1933, Dr. Mande completed his Ph.D., in 1967, in the field of Analytical Studies of Folklore. He started his career in 1955 as a Teacher in Government School in Pishor, Aurangabad. He joined Shri Shivaji College, Parbhani in 1961. He was Reader in Marathwada University for 17 years and retired as a Senior Professor in 1993. Some of his important books are 'Gawgadya Baher', 'Ramkathechi Maukhik Parampara' 'Lokrangbhoomi', 'Mangani Thyanche Magte' which are honoured by Maharashtra Sahitya Parishad Pune. He has presented more than 25 papers in National, Inter-National conferences held at Hyderabad, Mysore, Kolkata, Madurai, New Delhi, Cuttack and also at Heidelberg University, West Germany and Arizona University, USA (in absence).

3. Dr. Mande also started his studies on folklore and folk artist. While studying this he specially focused on collecting thousands of folk songs and hundreds of folk stories. He wrote on various folk arts, lifestyle of folk artist and their presentations of culture and tradition. This work has been highly appreciated by various universities. Folk literature was not included in the post-graduation studies at university level. Considering the importance of life style of these people of society, Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwada University included these studies for post graduation in 1973.

4. Dr. Mande prepared the syllabus for post-graduation course, wrote books for students which were included by universities for this subject. This subject was included at post-graduation level by other universities of Maharashtra. He established "Loksahitya Research Centre", a platform to young generations for studying folk lore and research projects on this. He conducted about 50 yearly seminars in Maharashtra and Goa. His many books are translated in Hindi and English languages.

5. Dr. Mande was honoured by various State and National level awards. He has been honoured with D. Lit in 1991 by Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwada University, Aurangabad for his books 'Gawgadya Baher' and 'Sanketik Gupta Bhasha: Parampara and Swaroop'. He was also honoured with Late Yashwantrao Chavan Puraskar; Honoured by Dr. Mohanjee Bhagwat, Sar Sanghchalak, RSS with Bhushan Puraskar and the title "Lok Maharshee"; Lok Shahir Annabhau Sathe Jeevan Gaurav by Maharashtra Government; Maharashtra Sahitya Parishad Jeevan Gaurav (Lifetime Achievement); Sangeet Natak Akadami Award from Government of India and many more.



डॉ. प्रभाकर भानुदास मांडे

डॉ. प्रभाकर भानुदास मांडे लोकगीत, लोक संस्कृति और साहित्य के एक प्रख्यात विद्वान हैं।

2. 16 दिसंबर, 1933 को जन्मे, डॉ. मांडे ने 1967 में लोकगीत के विश्लेषणात्मक अध्ययन के क्षेत्र में पीएच.डी पूरी की। उन्होंने 1955 में पिशौर, औरंगाबाद के सरकारी स्कूल में एक शिक्षक के रूप में अपना करियर शुरू किया। वह 1961 में श्री शिवाजी कॉलेज, परभणी में अध्यापन कार्य करने लगे। वह 17 वर्ष तक मराठवाड़ा विश्वविद्यालय में रीडर रहे और 1993 में एक वरिष्ठ प्रोफेसर के रूप में सेवानिवृत्त हुए। उनकी कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकें 'गवगद्य बहेर', 'रामकथेची मौखिक परंपरा' 'लोकरंगभूमि', 'मंगनी थायंचे मागतें' हैं जिन्हें महाराष्ट्र साहित्य परिषद, पुणे द्वारा सम्मानित किया गया है। उन्होंने हैदराबाद, मैसूर, कोलकाता, मदुरै, नई दिल्ली, कटक और हीडलबर्ग विश्वविद्यालय, पश्चिम जर्मनी और एरिज़ोना विश्वविद्यालय, यूएसए (अनुपस्थिति में) में आयोजित राष्ट्रीय, अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों में 25 से अधिक पेपर प्रस्तुत किए हैं।

3. डॉ. मांडे ने लोककथाओं और लोक कलाकारों पर अपना अध्ययन भी शुरू किया। उन्होंने, इन पर अध्ययन करते हुए, विशेष रूप से हजारों लोक गीतों और सैकड़ों लोक कथाओं का संग्रह करने पर जोर दिया। उन्होंने विभिन्न लोक कलाओं, लोक कलाकारों की जीवन शैली तथा संस्कृति और परंपरा पर उनकी प्रस्तुतियों पर लिखा। विभिन्न विश्वविद्यालयों द्वारा इस कार्य की अत्यंत सराहना की गई है। विश्वविद्यालय स्तर पर स्नातकोत्तर अध्ययन में लोक साहित्य को शामिल नहीं किया गया था। समाज के इन लोगों की जीवन शैली के महत्व पर विचार करते हुए, डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर मराठवाड़ा विश्वविद्यालय ने 1973 में इन अध्ययन को स्नातकोत्तर में शामिल किया।

4. डॉ. मांडे ने स्नातकोत्तर के लिए पाठ्यक्रम तैयार किया, छात्रों के लिए पुस्तकें लिखीं जिन्हें विश्वविद्यालयों द्वारा इस विषय के अंतर्गत शामिल किया गया। महाराष्ट्र के अन्य विश्वविद्यालयों द्वारा इस विषय को स्नातकोत्तर स्तर पर शामिल किया गया। उन्होंने "लोकसाहित्य अनुसंधान केंद्र" की स्थापना की, जो युवा पीढ़ियों के लिए लोककथाओं का अध्ययन करने और इस पर अनुसंधान परियोजनाओं के लिए एक मंच है। उन्होंने महाराष्ट्र और गोवा में लगभग 50 वार्षिक सेमिनार आयोजित किए। उनकी कई पुस्तकों का हिंदी और अंग्रेजी भाषाओं में अनुवाद किया गया है।

5. डॉ. मांडे को राज्य और राष्ट्रीय स्तर के अनेक पुरस्कार से सम्मानित किया गया। डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर मराठवाड़ा विश्वविद्यालय, औरंगाबाद द्वारा उन्हें उनकी रचनाओं— गावगाड्या बाहेर एवं सांकेतिक गुप्त भाषा: परंपरा और स्वरूप के लिए 1991 में डी. लिट से सम्मानित किया गया। उन्हें स्व. यशवंतराव चव्हाण; डॉ. मोहनजी भागवत, सरसंघचालक, आरएसएस द्वारा भूषण पुरस्कार; "लोक महर्षि" की उपाधि; महाराष्ट्र सरकार द्वारा लोक शाहीर अन्नाभाऊ साठे जीवन गौरव; महाराष्ट्र साहित्य परिषद जीवन गौरव (लाइफटाइम अचीवमेंट); भारत सरकार द्वारा संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार आदि से भी सम्मानित किया गया था।